विश्वभाषा के रूप में हिन्दी के बदलते सरोकार

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

आज हिन्दी सम्पूर्ण विश्व की संपर्क भाषा के रूप में आगे आ रही है। जितनी भी भाषाओं के संपर्क से हिन्दी भाषा गुजर रही है, उन सभी भाषाओं के शब्दों को बिना किसी संकोच के हिन्दी भाषा ने अपनाया है। यह एक विषेष गुण है जो हिन्दी भाषा को अन्य भाषाओं की अपेक्षा अलग अस्तित्व प्रदान करता है। हिन्दी प्रेम की भाषा है, हृदय की भाषा है। हिन्दी विष्व की जनता को आपस में एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखती है। जिस प्रकार भारत की राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने में हिन्दी ने लोहे की जंजीर का काम किया है। उसी प्रकार विष्व भाषा बन कर विश्व शान्ति एवं वैश्विक एकता को बनाये रखने में सक्षम है। हिन्दी हमारी संस्कृति है, जिसने विश्व स्तर पर भारत की शान बढ़ाई है और बसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श प्रतीक बन रही है।

बीज शब्द–*विश्वभाषा के रूप में हिन्दी,बदलते सरोकार, जनसंचार माध्यम, देश–विदेश और वैश्विक मीडिया।*

आखिर वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो किसी भाषा को वैश्विक संदर्भ प्रदान करती हैं। सामान्यतः विश्व व्यवस्था को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रयुक्त होने वाली भाषाएँ विश्व भाषा कहलाने की अधिकारिणी हैं परन्तु अध्ययन की सुविधा के लिए उसके कुछ ठोस निकष अथवा प्रतिमान बनाने होंगे। ऐसा करके हम हिंदी के विश्व संदर्भ का वस्तुपरक विश्लेषण कर सकते हैं। संक्षेप में, विश्वभाषा के निम्नलिखित अभिलक्षण निर्मित किए जा सकते हैं–उसके बोलने–जानने तथा चाहने वाले भारी तादाद में हों और वे विश्व के अनेक देशों में फैले हों। उस भाषा में साहित्य–सृजन की प्रदीर्घ परंपरा हो और प्रायः सभी विधाएँ वैविधपूर्ण एवं समृद्ध हों। उस भाषा में सृजित कम–से–कम एक विधा का साहित्य विश्वस्तरीय हो। उसकी शब्द–संपदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की अन्यान्य बड़ी भाषाओं से विचार–विनिमय करते हुए एक–दूसरे को प्रेरित –प्रभावित करने में सक्षम हो। उसकी शाब्दिक एवं आर्थिक संरचना तथा लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसका पठन–पाठन और लेखन सहज–संभाव्य हो। उसमें निरंतर परिष्कार और परिवर्तन की गुंजाइश हो। उसमें ज्ञान–विज्ञान के अनेक अनुशासनों में वाङमय सृजित एवं प्रकाशित हो तथा नए विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता हो। वह नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने–आपको पुरस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त हो। वह अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक हो। उसमें इन सबको तथा विश्व मन की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने का माद्दा हो। वह जनसंचार माध्यमों में बड़े पैमाने पर देश–विदेश में प्रयुक्त हो रही हो। वैश्विक मीडिया में उसका प्रभावी हस्तक्षेप हो।

भाषा का राजनीति से गहरा सम्बन्ध है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण स्वयं अंग्रेजी है। मैकाले ने जा कहा था उसे कुछ समय के लिए भूल जाएँ तो भी अंग्रेजी के खिलाफ अगर भाग्य ने फ्रांसीसियों का साथ दिया होता तो क्या हम आज फ्रांसीसी की वकालत नहीं कर रहे होते। अल्जीरिया, मोरक्को से लेकर कम्पूचिया तक न जाने कितने देश है जहाँ आज भी शासक वर्गों और सत्ता की भाषा फ्रांसीसी है लातिन अमरीकी देशों में यह स्पेनिश और पुर्तगाली है।

जार्ज ग्रियर्सन की विशेष ख्याति भाषाओं के सर्वेक्षण संबंधित पुस्तक लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया के कारण है। ग्रियर्सन सन्1888 ई0 से सन्1903 ई0 तक इस कार्य के लिए सामग्री का संकलन किया। 1902 ई में नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद उन्होंने 1903 ई0 में जब भारत छोड़ा तभी से सर्वे के विभिन्न खंड प्रकाशित होने लगे थे । ग्रियर्सन ने अपने सर्वे में भारत की 179 भाषाओं और 544 बोलियों का विस्तार से सर्वेक्षण प्रस्तुत किया है। उसमें भारतवर्ष का भाषा संबंधी मानचित्र मिलता है जिसका सांस्कृतिक रूप से अत्यधिक महत्व है। दैनिक जीवन में प्रयुक्त भाषाओं और बोलियों का इतना सूक्ष्म अध्ययन इससे पहले कभी नहीं हुआ था।

चंदबरदाई, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मलिक मोहम्मद जायसी, बिहारीलाल, भारतेंदु हरिश्चंद्र सहित 952 हिंदी साहित्यकारों के जीवन एवं साहित्य का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए ग्रियर्सन ने कुछ निबंध एवं टिप्पणियाँ भी लिखीं। बाद के दिनों में उन निबंधों और टिप्पणियों को सुव्यवस्थित करके एक साहित्य के इतिहास का ग्रंथ तैयार हुआ जो सन्1888 ई0 में रॉयल ऐसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल के जर्नल में प्रकाशित हुआ। सन्1889ई0 में इसे द मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान नाम से एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में एशियाटिक सोसायटी द्वारा इसका प्रकाशन किया गया। अंग्रेजी भाषा में लिखी गई इस पुस्तक को हिंदी साहित्य का पहला वैज्ञानिक इतिहास ग्रंथ स्वीकार किया गया है।

ग्रियर्सन के सर्वाधिक प्रिय कवि तुलसीदास थे। जार्ज ग्रियर्सन ने रामचरितमानस का एक वैज्ञानिक संस्करण तैयार कराया था, जो पटना से प्रकाशित हुआ था। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि डॉ0 ग्रियर्सन की संस्तुति पर ही अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध द्वारा लिखित पुस्तक 'ठेठ हिंदी का ठाठ' भारतीय सिविल सेवा (आईसीएस) के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गई थी। कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए हरिऔध जी ने 'ठेठ हिंदी का ठाठ' नामक पुस्तक डॉ0 ग्रियर्सन को समर्पित किया था। ग्रियर्सन की हिंदी की सेवा को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वे हिंदी के अनन्य प्रेमी थे। ग्रियर्सन हिंदी को आम बोलचाल की महाभाषा कहते थे। विदेशी होने के बावजूद उन्होंने खड़ी बोली हिंदी को न केवल सीखा बल्कि उस सीख को ग्रियर्सन ने हिंदी की पाठ्यपुस्तक तैयार कर हिंदी को ही लौटा दिया।

विश्व के विभिन्न देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ायी जाती है। प्रवासी भारतीय हिन्दी भाषा को अपनी सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा समझ कर उसे धरोहर के विभिन्न देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती है। प्रवासी भारतीय हिन्दी भाषा को अपनी सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा समझकर उस धरोहर की भाषा वैश्विक स्तर पर प्रगति की दिशा में संयुक्त राष्ट्र संग में हिन्दी को स्थान देने का प्रयास निरन्तर जारी रहा है। ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन आदि के द्वारा हम आज विश्व में हिन्दी की स्थिति को जान सकते हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलनों की पृष्ठभूमि, परम्परा और उपलब्धियों पर विचार करें तो स्पष्ट है कि इन सम्मेलनों के आयोजन से

हिन्दी के भौगोलिक क्षेत्र में निश्चित रूप से विस्तार हुआ है। और इस विस्तार को सार्थक बनाने के लिए हिन्दी भाषा को भारत तथा विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों को युवा पीढ़ियों को जोड़ने का एक सफल सोपान सिद्ध हुआ है।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में वैश्विक स्तर पर हर प्रकार का आदान–प्रदान सहज रूप से सम्भव हो गया है। ''उपभोग की सामग्रियाँ जैसे मजदूर, पूँजी, व्यवसाय और तकनीक के एक से दूसरे देश जाने के सिलसिले को ही भूमण्डलीकरण कहते हैं। यद्यपि यह भूमण्डलीकरण कहने को विभिन्न देशों के मध्य किया गया एक आर्थिक समझौता मात्र है किन्तु इसका असर राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों पर भी स्पष्ट दिखाई देता है। आज के इस बाजारवादी युग में जब एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए पासपोर्ट और बीजा के नियमों में शिथिलता आ चुकी है, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के निर्बाध आगमन से न केवल वस्तुओं और सामानों का आयात निर्यात हो रहा है बल्कि इनके साथ उस देश की भाषा और संस्कृति भी हमारे देश में स्वतः ही आयातित हो रही है। ''भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती। यह अपने देश काल की संस्कृति की आत्मा होती है। इतिहास के पन्नों पर सत्य का उत्स एवं साहित्य में अनुभवजनित निरन्तरता के प्रतीकों और मिथकों की अनुकरणीय श्रृंखला होती है। आज भूमण्डलीकरण के दौर में जब भाषाई महत्व को बाजार से जोड़कर देखने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है, विश्व की पराजित भाषाएँ अपनी–अपनी देसी अस्मिता बनाए रखने के लिए संघर्ष करती दिखाई दे रही है। इस संघर्ष की छटपटाहट को वैश्विक लेखकों की भाषाई बेचैनी में स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य शान्ति और विश्वबन्धुत्व का साहित्य है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का साहित्य है। युद्ध,विनाश और विध्वंस इसकी मूल प्रकृति में नहीं है। महात्मा गाँधी के अनुयायी काका कालेलकर ने जब विश्व हिन्दी सम्मेलन की परिकल्पना की थी तो उनकी मंशा सम्पूर्ण विश्व को इस भाषा की वैज्ञानिकता के साथ इसके साहित्य से परिचित कराने की भी थी। ''विश्व हिन्दी सम्मेलन की परिकल्पना महान गाँधीवादी लेखक काका कालेलकर ने महात्मा गाँधी के इस स्वप्न को लेकर की थी कि हिन्दी ही संसार की एकमात्र भाषा है, जो सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में जोड़कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का निर्माण कर सकती है।'' ''हिन्दी मानवता, विश्वबन्धुत्व, सदाचार, शिष्टाचार और सद्व्यवहार की भाषा है। हिन्दी का विशाल साहित्य समकालीन युद्धों के विपरीत प्रेम, करुणा, आराधना और समर्पण का साहित्य है। समकालीन मानव हिन्दी भाषा और साहित्य के इस धरातल पर उतर आएं तो दुनिया के सारे आतंक और युद्ध के सारे खतरे अपने आप मिट जाएँगे। मानव को यह समझना होगा कि जब भारत विदेशी आक्रमणों से लहूलुहान था, हमारे भक्त कवियों ने उन युद्धों से परेशान मनुष्य को प्रतिरोध में हिंसा और युद्ध के बजाय प्रेम का संदेश दिया था। यहाँ तक कि इन कवियों ने प्रेम को ईश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग बताया। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि इस वैज्ञानिक युग में भी आध्यात्म, नैतिकता एवं संवेदनाओं के महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता है। इस संदर्भ में काका कालेलकर व महात्मा गाँधी के स्वप्न को हम दिवास्वप्न या काल्पनिक विचार नहीं कह सकते। काका कालेलकर चाहते थे कि हिन्दी के विराट समुद्र से हर आदमी परिचित हो। वह जानते थे कि सूर, कबीर, तुलसी, मीरा, रसखान, जायसी और नरसिंह मेहता के अथाह साहित्य से संसार के प्रति प्रेम और वसुधैव कुटुम्बकम् का भरपूर पाठ सीखा जा सकता है। वे यह भी जानते थे कि हिन्दी भाषा और उसका साहित्य ही दुनिया को बता सकता है कि भावना विहीन विज्ञान संसार का अंत कर देगा। उसे मनुष्य की भावना

से समरस कर मनुष्य के कल्याणार्थ बनाना होगा। काका कालेलकर, दिनकर और जयशंकर प्रसाद की काव्य संवेदना को विश्व हिन्दी के बहाने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष ले जाना चाहते थे।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्वायत्त एवं स्वैच्छिक संस्थाओं के माध्यम से देश–विदेशों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जाये।विश्व में हिन्दी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की निःशुल्क वितरण की व्यवस्था की जाये। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी पुस्तक प्रदर्शिनियों का आयोजन किया जाये। वैश्विक स्तर पर पत्राचार द्वारा हिन्दी का शिक्षण कराया जाये।हिन्दी भाषा के विस्तार हेतु केन्द्रीय हिन्दी संस्थान अग्रिम भूमिका निर्वहन करें।अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों एवं कार्य–गोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए। प्रसार सेवा के कार्यक्रम के माध्यम से विदेशियों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था की जानी चाहिये। विभिन्न देशों में भारतीय दूतावास द्वारा हिन्दी के प्रसार के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा की प्रतिष्ठा केवल उस भाषा को बोलने वालों की संख्या पर आधारित नहीं होती है वरन इसके लिए अनेक प्रतिमान निर्भर करते हैं। हिन्दी भाषा का जो सबसे महत्वपूर्ण गुण, और वह है इसकी सरलता और आसानी से उपलब्धता। इसलिए हिन्दी की महत्ता में और इजाफा हो जाता है। इसकी अखंडता और प्रगाढ़ हो जाती है जब हिन्दी की सरलता के साथ–साथ हिन्दी की आसान पहुंच, उपलब्धता भी जुड जाती है जो इसके वैश्विक रूप को आलंबन देती है। आज हिन्दी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में हैं आज विश्वस्तर पर उसकी स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा रही है। भाषा के वैश्विक संदर्भ में हिन्दी भाषा में वह सभी विशेषताएँ हैं जो हिन्दी को विश्वभाषा की संज्ञा प्रदा करने में सहायक है। इनमें प्रमुख है–हिन्दी भाषा का पठन–पाठन और लेखन सहज–संभाव्य है एवं हिन्दी भाषा में निरन्तर परिष्कार और परिवर्तन की संभावना निहित है। हिन्दी भाषा में ज्ञान–विज्ञान के तमाम अनुशासनों में वांगमय सृजित एवं प्रकाशित हैं एवं नए विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता है। हिन्दी नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने–आपको परिष्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त है। हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भो, सामाजिक संरचनाओं एवं सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक है। हिन्दी बड़े–पैमाने पर जनसंचार माध्यमों से विश्व स्तर पर प्रयुक्त हो रही है। वैशिवक मीडिया में उसका प्रभावपूर्ण प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्वपूर्ण भाषाओं में शामिल हो रही है। हिन्दी भाषा में पठन–पाठन तथा प्रसारण की सुविधा अनेक देशों में उपलब्ध है।हिन्दी भाषा में मानवीय एवं यांत्रिक अनुवाद की आधारभूत तथा विकसित सुविधा उपलब्ध है। साथ ही बहुभाषिक कम्प्यूटर की दुनिया में अपने समग्र सूचना स्रोत तथा प्रक्रिया सामग्री (साफ्टवेयर) के साथ उपलब्ध है। हिन्दी वर्तमान प्रौद्योगिकीय उपलब्धि में (ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट तथा एस०एम०एस० एवं वेव जगत) प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कर रही है।

भाषा और साहित्य की समृद्धि तथा भाषा भाषियों की संख्या आदि सभी दृष्टियों से हिन्दी संसार की विशिष्ट एवं कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण भाषाओं में एक है इसके बारे में अब कहीं कोई विवाद नहीं रहा है। भारत के बाहर लगभग 100 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन हो तथा विकासशील देशों में इसकी लोकप्रियता निरन्तर बढती जाए यह भी इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी का परिवार बृहत और व्यापक बनता जा रहा है। आज इस बात से अधिकतर लोग अवगत हैं कि हिन्दी मात्र भारत में ही नही संसार के अनेक देशों में बड़ी लोकप्रिय है। हिन्दी जिस

गति तथा आन्तरिक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही है उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि आगे आने वाले समय में हिन्दी दुनिया की सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषा बन जायेगी। आज विश्व का हर पाँचवा व्यक्ति हिन्दी बोलने व समझने में सक्षम हैं। हिन्दी जानने, समझने और बोलने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब विश्व भर की वेबसाइटस हिन्दी को भी बरायता दे रही हैं। हिन्दी प्रयोग करने वालों की संख्या के आधार पर सन् 1952 ई0 में हिन्दी विश्व में पांचवे स्थान पर थी। सन् 1980 ई0 में यह चीनी व अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई है। सन् 1991ई0 की जनगणना में पाया गया कि हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या अग्रेंजी भाषियों से अधिक हैं। भारत सरकार के केंद्रीय हिन्दी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रो० महावीर सरन जैन द्वारा सन् 1998 ई0 में विश्व की भाषाओं संबंधी यूनेस्कों को भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर विश्व स्तर पर स्वीकृत किया गया कि मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संचार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान हैं। वस्तुतः हिन्दी भाषा भारतीय जनमानस की मातृभाषा है, स्वाधीनता संग्राम की भाषा रही है। करोड़ों, अरबों भारतीयों की भाषा है। करोड़ों प्रवासी भारतीयों की भाषा है। बोलने की संख्या की दृष्टि से आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में अग्रणी है किन्तु अपने ही देश में हिन्दी की दशा सोचनीय है। आज भारत में हिन्दी राष्ट्रभाषा बनने के लिए राजनेताओं पर आश्रित है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी दोनों ही हिन्दी के प्रति पर्याप्त संवेदनशील रहे हैं। और यह स्वागत योग्य है कि मा0 नरेन्द्र मोदी जी ने हिन्दी को पाठ्यक्रम की भाषा बना दिया है। और आशा है कि भविष्य में इसे राष्ट्रभाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाएँगे और उसे देश के भीतर राष्ट्रभाषा और विश्व स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय भाषा घोषित करेंगे।

सन्दर्भ

1. द्विवेदी, महेश चन्द्रः अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हिन्दी का वर्तमान और भविष्य'– अनहद कृति : साहित्य की अनवरत बहती लहर ।
2. इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ और हिन्दी (1/18/2020) https://yaayavari. wordpress.com/tag/चुनौतियाँ।
3. भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी–विकिपीडिया https:hi.wikipedia. org/wiki/
4. सिंह, प्रकाश (सितम्बर 2013): भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी का महत्व और निबंध https://www.nayichetna.com/2017/09/hindi-language-diwas-essay-in-hindi.html
5. कुमार, सचिन (01/09/2020): वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी https://www.bharat darshan.co.nz/article-details/859/hindi-article-dr-sachin-kumar.html.
6. जांगिड़, रामजीलालः विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी का स्थान https://baratdiscovery.org/bbaratkosh/w/index/php?title विश्व–की–प्रमुख–भाषाओं–में–हिन्दी–का–स्थान–डॉ० रामजीलाल–जांगिड़ folded=617102.
7. उपाध्याय, करूणाशंकरः विश्व में हिन्दी का स्थान, https://www. sahityasamvad.com/articles/vishwa-hindi-199.html.
8. भाग व प्रमोदः संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी, https://hindi. webunia. com/10th-world-

hindi-conference-articles/vishwa-hindi-sammelan-115090900054-1.html

9. हिन्दी को विश्व भाषा बनाने की चुनौती, https://www.linehindustan.com/news/guestcolumn/articlel-story-484042-html 21Jun2015.
10. प्रसाद, सिद्धेश्वर, अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में हिन्दी।
11. जन जन की भाषा हिन्दीः हिन्दी भाषा का वर्तमान एवं भविष्य : एक व्यावहारिक विवेचन, apnibhashahindi.blogspot.com/2009/03/blog-post.html
12. सिंह, शशि, विश्व पटल पर हिन्दी 2015, https://drshashisinghal.wordpress.com/2015/09/03 विश्व–पटल–पर–हिन्दी
13- अवस्थी, राजेशः हिन्दी भाषा की भूमिकाः विश्व के संदर्भ में, भारतकोष, ज्ञान का हिन्दी महासागर http://bharatdiscovery.org/india/
14. डॉ0 अंबादास देशमुख, भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2007
15. डॉ0 सु0 नागलक्ष्मी, प्रयोजन मूलक हिन्दी प्रासंगिता एवं परिदृश्य, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम संस्करण–2008
16. भाषा और औरतें उद्धृत साझी उड़ान (कविता संग्रह), सैनबन पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012
17. भूमण्डलीकरण का अमानवीय चेहरा, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण–2016
18. प्रो0 राधा सिन्हा – ग्लास्गो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर, 2010 के जुलाई अंक फिलहाल पत्रिका, अंक जुलाई–सितम्बर 2010
19. वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी उद्धृत, भूमण्डलीकरण का अमानवीय चेहरा, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण–2016
20. डॉ0 राजीव सिन्हा, आलेख मॉरीशस मेरी आँखों के क्षितिज पर, उद्धृत समकालीन अभिव्यक्ति संपादक–डॉ0 उपेन्द्र कुमार मिश्र,अप्रैल–दिसम्बर 2018